कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा गोदित स्मार्ट ग्राम

नेवरा रोड़

पंचायत समिति–ओसियां (जोधपुर)

संपादित गतिविधियों का ब्योरा

गोदित अवधि

जनवरी 2016–जून 2018

प्रसार शिक्षा निदेशालय

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

प्रकाशन क्रमांक
21/2019

संकलन एवं लेखन
डॉ. ईश्वर सिंह, निदेशक, प्रसार शिक्षा
डॉ. महेन्द्र कुमार, सह आचार्य (प्रसार शिक्षा)

सहयोग
दीपक कुमार गुजर, गरवर सिंह
कु. पूनम, कु. शिल्पा, कु. अर्चना

प्रकाशक
प्रसार शिक्षा निदेशालय
कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
मण्डोर 342 304 राजस्थान, भारत

डॉ. ईश्वर सिंह
निदेशक प्रसार शिक्षा
कृषि विश्वविद्यालय
जोधपुर

प्राक्कथन

माननीय राज्यपाल राजस्थान श्री कल्याण सिंह ने स्मार्ट विलेज इनिशिएटिव परियोजना के तहत राज्य के समस्त विश्वविद्यालयों को एक-एक गाँव गोद लेकर स्मार्ट ग्राम में विकसित करने के दिशा निर्देश जनवरी 2016 में प्रदान किये थे। इस कार्य के लिए कुलपति महोदय कृषि विश्वविद्यालय,जोधपुर ने अधोहस्ताक्षरकर्ता को नोडल अधिकारी नियुक्त किया। नेवरा गांव को इस योजना के अन्तर्गत गोद लेकर स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया गया। जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर आधारित इस गाँव को स्मार्ट ग्राम में विकसित करने के लिए विस्तृत कार्य योजना बना उसे गंभीरतापूर्वक लागू किया गया।

फसल प्रदर्शन, जल संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, स्मार्ट कम्प्यूटर बोर्ड, शिक्षा एवं स्वास्थ्य तथा अन्य गतिविधियों के माध्यम से वैज्ञानिकों की एक टीम लगातार गाँव मे काम करती रही और उसके सुखद परिणाम प्राप्त हुए। इस कार्य के लिए गाँव के सरपंच श्री देदाराम, प्रगतिशील किसान श्री गोरधनराम को मैं उनके सहयोग के लिए धन्यवाद अर्पित करना चाहूँगा साथ ही इस कार्य के लिए चयनित वैज्ञानिकों डॉ. राजूलाल भारद्वाज, डॉ महेन्द्र कुमार, डॉ. एम. एम. सुन्दरिया, डॉ. जे. आर. वर्मा, डॉ. राजु भारद्वाज, मोतीलाल मेहरिया का भी मैं आभार प्रकट करना चाहूँगा जिनके माध्यम से इस योजना को मूर्त रूप दिया गया।

दिनांक 19.07.2019

(डॉ. ईश्वरसिंह)

स्मार्ट विलेज अवधारणा

"देश स्मार्ट तभी होगा जब गाँव स्मार्ट बनेंगें।" इस अवधारणा के सूत्रधार एवं उसको मूर्त रूप देने के उद्देश्य से माननीय राज्यपाल राजस्थान श्री कल्याण सिंह जी ने "स्मार्ट विलेज इनिशिएटिव" परियोजना के तहत राज्य के समस्त विश्वविद्यालयों को एक गांव गोद लेकर उसे स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने हेतु दिशा-निर्देश प्रदान किये।

इस योजना का मूल उद्देश्य गोद लिए गाँवों मे विभिन्न विभागों एवं संस्थानों के सहयोग से मूलभूत सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण, जीविकोपार्जन में सुधार तथा उत्पादकता में वृद्धि कर समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर में उन्नयन करना था।

संपादित गतिविधियों का ब्योरा

1. गोदित गाँव का चयन एवं बेंच मार्क सर्वे :

माननीय राज्यपाल राजस्थान श्री कल्याण सिंह के दिशा निर्देशों के अर्न्तगत कुलपति महोदय कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर ने इस कार्य के लिए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. ईश्वर सिंह को नोडल अधिकारी (जनवरी 2016) नियुक्त किया। इसके पश्चात् नोडल अधिकारी के नेतृत्व में वैज्ञानिकों द्वारा नेवरा गांव को गोद लेकर स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया गया। नोडल अधिकारी एवं वैज्ञानिकों द्वारा सर्वप्रथम इस गांव का बैंच मार्क सर्वे किया और पता लगाया गया कि गाँव में क्या-क्या विकास कार्य करवायें जा सकतें हैं। सर्वे को आधार मानकर गाँव को स्मार्ट ग्राम में तब्दील करने की विस्तृत कार्य योजना बनाई गई। नेवरा रोड़ गाँव में खेती एवं पशु पालन आजीविका का प्रमुख साधन था अत: गांव के आर्थिक विकास हेतु कृषि वैज्ञानिकों ने फसल प्रदर्शन, जल एवं मृदा संरक्षण को मुख्य आधार बनाया। माननीय राज्यपाल के दिशा-निर्देशों की पालना में एक सलाहकार समिति का गठन किया गया जिसमें प्रशासन, कृषि विभाग, जिला परिषद, नाबार्ड, पशुपालन विभाग, विद्युत वितरण निगम, वन विभाग, पंचायती राज विभाग एवं अन्य संबंधित विभाग के अधिकारीयों और उनके प्रतिनिधियों को शामिल किया गया।

टीम स्मार्ट विलेज :

नोडल अधिकारी : डॉ. ईश्वर सिंह (जनवरी 2016 से फरवरी 2017)
डॉ. भारत सिंह भीमावत (मार्च 2017 से अक्टूबर 2017)
डॉ. ईश्वर सिंह (नवम्बर 2017 से जून 2018)

वैज्ञानिकगण: डॉ. बी.आर. चौधरी, डॉ. वी.एस. जैतावत,डॉ. सीताराम कुम्हार,डॉ. महेन्द्र कुमार, डॉ. सेवाराम कुमावत, डॉ जे. आर. वर्मा, डॉ. राजूलाल भारद्वाज, डॉ लतिका व्यास,डॉ. हरीसिंह,डॉ. एम.एम. सुन्दरिया, डॉ.

मोतीलाल मेहरिया, डॉ. पंकज लवाणिया, डॉ. मूलाराम एवंडॉ. ईश्वर सिंह काजला

2 गाँव नेवरा रोड़ की सर्वे रिपार्ट :

गाँव की कुल जनसंख्या करीब सात हजार है और यह गाँव जोधपुर से 42 किलोमीटर की दूरी पर ओसियां रोड़ पर बसा हुआ है। यह गांव एक कृषि आधारित गांव हैं, जिसमें ज्यादातर परिवार खेती एवं पशुपालन पर निर्भर हैं। मुख्य गांव के अलावा अलग-अलग छोटी छोटी ढ़ाणियों में यह गांव बसा हुआ हैं। खेती ज्यादातर ट्यूबवैल/बोरवेल द्वारा सिंचाई करके की जाती हैं। गांव की करीब 30 प्रतिशत जमीन पर सिंचित खेती होती हैं। मृदा ज्यादातर रेतीली हैं, मगर कुछ निचले हिस्सों में रेतीली दोमट मृदा भी पाई गई हैं। नेवरा रोड़ गाँव में वर्षा ऋतु में बाजरा, मूंग, ग्वार, मोठ, तिल तथा शरद ऋतु में जीरा, ईसबगोल, गेहूँ, राया, गाजर सब्जियाँ एवं हरें चारे की प्रमुखता से खेती की जाती है।

3. स्मार्ट गाँव में सफाई अभियान एवं विचार गोष्ठी :

नेवरा गांव में सर्वप्रथम एक विस्तृत सफाई अभियान का आगाज तथा 100 से अधिक विश्वविद्यालय कर्मचारी और छात्रों के साथ किया गया। इस अभियान में गाँव के सरपंच के साथ-साथ ग्रामवासियों और किसानों ने भी भागीदारी निभाई। इसके पश्चात ग्राम पंचायत नेवरा रोड़ के सभागार में आयोजित विचार गोष्ठी के दौरान माननीय कुलपति महोदय द्वारा गाँव को गोद लेकर स्मार्ट ग्राम में बदलने की घोषणा की गई तथा साथ ही इस गोष्ठी में किसानों की खेती संबंधी समस्याओं का निवारण के साथ घरों में शौचालय बनाने तथा वातावरण को स्वच्छ रखने के लिये प्रेरित किया गया। गुटखा खाने एवं पौलीथिन थैलियों से होने वाले दुष्प्रभावों से ग्रामीणों को अवगत कराया गया और इसके कम इस्तेमाल की शपथ दिलाई गई। समय-समय पर नोडल अधिकारी एवं कर्मचारीयों के सहभागिता से कई सफाई अभियानों को सम्पन्न किया गया।

गाँव में सफाई अभियान

प्रथम विचार गोष्ठी

गंदगी नहीं फैलाने की शपथ

4. फसलों की उन्नत किस्मो के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन :

इस गांव में किसानों की मांग को देखते हुए अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (कृषि अनुंसधान केन्द्र, मण्डोर) द्वारा गोदित अवधि के दौरान आवंटित 300 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों को गांव के किसानों के खेतों पर लगाया गया। इसमें सीमान्त एवं मध्यमवर्गीय किसानों को प्राथमिकता दी गई। इन सभी किसानों को 0.4 हैक्टेयर भूमि पर खरीफ (बाजरा, ग्वार, तिल, अरण्डी, मूंग, मोठ) तथा रबी (गेहूं, चना, राया, जीरा, ईसबगोल) में उगाई जाने वाली फसलों के प्रदर्शन हेतु उन्नत एवं नवीनतम विकसित किस्मों के बीज, उर्वरक एवं कीटनाशक दिये गये। आदान वितरण के दिन एक विचार गोष्ठी वैज्ञानिकों के द्वारा रखी गई, जिसमें उपरोक्त फसलों की उन्नत खेती की तकनीकों को विस्तार से किसानों को बताया गया। आधुनिक तकनीक एवं उन्नत किस्मों की खेती से किसानों को 20 से 30 प्रतिशत तक अधिक उपज प्राप्त हुई।

उपरोक्त कार्य हेतू मूंग की जी.एम.4, जी.ए एम.5 अरण्डी की जी.सी. एच 7, बाजरा की एम. पी. एम. एच 17, तिल की आर. टी. 351, राया की पी. एम. 26, गेहूँ की राज-4083, जीरे की जी.सी. 4 एवं ईसबगोल की आर. आई 1 किस्मों को नेवरा रोड़ गाँव के किसानों के खेतों पर प्रदर्शित किया गया। इस कार्य के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी की सहायता भी ली गई।

नेवरा गाँव, कृषि विज्ञान केन्द्र, फलौदी के अंतर्गत आने वाली तहसील ओसियां में आता हैं। नोडल अधिकारी (निदेशक प्रसार शिक्षा) एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष कृषि विज्ञान केन्द्र, फलौदी द्वारा खरीफ एवं रबी पूर्व कुल 12 विचार गोष्ठीयां एवं किसान वैज्ञानिक संवाद नेवरा गांव में आयोजित किये गये। इनका मूल उद्देश्य उन्नत कृषि तकनीकी का प्रचार प्रसार करना था।

मा. कुलपति एवं निदेशक अनुसंधान डॉ. बी.आर. चौधरी द्वारा प्रदर्शनी में लगाई उन्नत किस्मों का अवलोकन

5. जल संरक्षण :

जिला कलेक्टर एवं जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के अधिकारियों से समन्वय कर नेवरा रोड गाँव में तीन तालाबों का पुनरुद्धार किया गया। फलस्वरूप इन तालाबों में पानी ज्यादा मात्रा में जमा हुआ और तालाबों के आस-पास कुँओं के जल स्तर में वृद्धि हुई।

सिंचाई हेतु भू-जल की कमी को देखते हुए जल संरक्षण हेतु बून्द-बून्द सिंचाई पद्धति को बढ़ावा देने के लिये नेवरा गांव के प्रगतिशील किसान श्री गोरधनराम को अरण्डी में बून्द-बून्द सिंचाई पद्धति अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया गया। फलस्वरूप आज इनके खेत पर अरण्डी की खेती बून्द-बून्द सिंचाई द्वारा की जा रही हैं। इस तकनीक के प्रचार-प्रसार हेतु दिसम्बर 2015 के दौरान नेवरा रोड के 200 किसानों को श्री गोरधनराम के खेत का भ्रमण कराया गया और एक किसान दिवस का आयोजन कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, फलौदी के नेतृत्व में इनके खेत पर किया गया।

तालाबों का पुनरोद्धार एवं सफाई

6. स्वास्थय जागरूकता :

गाँव में समय समय पर गोदित अवधि के दौरान स्वास्थय जागरूकता शिविर आयोजित किये गयें जिसमे उनकी स्वास्थय की जाँच हेतु डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्ण आर्युवेद विश्वविद्यालय एवं सेटेलाइट अस्पताल, मण्डोर के चिकित्सकों की भी सेवाएं ली गई। योग दिवस के अवसर पर गाँव के उच्च माध्यमिक विद्यालय में ग्रामीण भाईयों, छात्रों और शिक्षकों के साथ योग अभ्यास किया गया।

प्राथमिक स्तर के विद्याथियों को सफाई के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए स्कूल में समय-समय पर वैज्ञानिकों को भेजकर हाथ धोने के सही तरीके से लेकर किशोरी छात्राओं में शारीरीक स्वच्छता रखने के लिए व्याख्यान दिलाये गये। संक्रमण से फैलने वाली बीमारी जैसे स्वाइन फ्लू, टी.बी., एड्स आदि बीमारियों से रोकथाम के उपाय बताये गये। खुले में शौच की प्रवृति से होने वाली बीमारियों से अवगत कराया गया।साथ ही बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने एवं सड़क परिवहन में दुपहिया वाहन चालकों को हेलमेट की उपयोगिता पर भी विस्तार से जानकारी दी गई।

प्रो. (डॉ.) कमलेश सिंह आई आई टी, नई दिल्ली द्वारा महिलाओं का सम्बोधन

डॉ. ईश्वरसिंह नोडल अधिकारी स्कूल स्टॉफ के संग योगा अभ्यास

7. पशुपालन:

गाँव की ज्यादातर आबादी खेती के साथ पशुपालन भी करती है, इस बात को ध्यान में रखते हुए कृषक वैज्ञानिक संवाद के दौरान पशुपालन के विषय विषेशज्ञों को सम्मलित कर गाय, बकरी, भैंस इत्यादी की उन्नत नस्लों और उनके प्राप्ति की स्थान एवं कृत्रिम गर्भाधान की जानकारी एवं पशुओं में होने वाले प्रमुख रोगों के प्रबंधन की जानकरी दी गई। नेवरा गांव में किसानों द्वारा पशुपालन को भी व्यवसाय के रूप में भी अपनाया जाता हैं। मगर किसानों द्वारा बकरी पालन एवं दुग्ध उत्पादन का व्यवसाय परम्परागत तरीके से किया जाता हैं। इस वजह से किसानों को इसका समुचित लाभ नहीं मिल पाता हैं। अब तक की गई विचार गोष्ठीयों में किसानों को पशुओं के टीकाकरण एवं उन्नत तरीकें से शैड बनाकर पशुपालन करने के सुझाव दिये गये। फलस्वरूप 4-5 किसानों द्वारा पशुपालन हेतु शैड बनाकर आधुनिक पद्धति से दुग्ध उत्पादन को व्यवसाय के रूप में शुरू किया।

8. समन्वित कीट और रोग प्रबंधन तथा कम्पोस्ट जागरूकता अभियान :

कृषि विज्ञान केन्द्र, फलौदी द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी में सब्जियों में कीटनाशकों के अत्यधिक इस्तेमाल के बारे में किसानों को सावधान किया गया। इन विचार गोष्ठीयों में समन्वित कीट व पौध व्याधि प्रबंधन, जल एवं मृदा संरक्षण, जैविक खेती, लवणीय जल में उगाई जाने वाली फसलों एवं उनकी किस्मों के बारे में भी जानकारी दी गई। आधुनिक तरीके से खाद बनाने के लिये किसानों को कंम्पोस्ट पिट बनाने की जानकारी दी गई हैं। फलस्वरूप कई किसान अब पशुओं के गोबर को खुले में ना डालकर कंपोस्ट पिट द्वारा खाद बनाने लगे हैं। यह खाद उनके द्वारा खेती में इस्तेमाल हो रहा हैं।

9. वृक्षारोपण :

गोदित अवधि के दौरान कुल 600 से अधिक पौधे किसानों को वितरित किये गये। प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु में वन विभाग की नर्सरी से 250-300 पौधों (बरगद, नीम, शीशम, खेजडी, गुलमोहर, नींबू, गोंदा, सेहजन इत्यादी) को खरीद कर नेवरा रोड़ के गाँव निवासियों को मांग अनुसार वितरित किये गये। ज्यादातर पौधे अच्छी अवस्था में फल फूल रहे है।

पौधारोपण

10. स्मार्ट बोर्ड व कम्प्यूटर:

नोडल अधिकरी डॉ. ईश्वर सिंह के प्रयासों से आई. आई. एफ. एल. मुम्बई की फर्म ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नेवरा रोड़ के विद्यार्थियों के लिएरूपये 1,10,000/-की वित्तीय मदद से एक स्मार्ट कम्प्यूटर बोर्ड लगवाया। इस बोर्ड में कक्षा प्रथम से लेकर बाहरवी तक की विषयों की पढ़ाई कम्प्यूटर के माध्यम से हो सकती हैं। स्मार्ट बोर्ड का गाँव के सरपंच श्री देदाराम, कुलपति कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर डॉ. बलराज सिंह एवं तत्कालीन नोडल अधिकारी डॉ. भारत सिंह भीमावत की मौजूदगी में दिनांक 4 अगस्त, 2017 को स्कूल में उद्घाटन किया गया।

स्मार्ट बोर्ड व कम्प्यूटर का उद्घाटन

11. प्रशिक्षण कार्यक्रम :

फल एवं सब्जी एवं अन्य फार्म उत्पादनों के मूल्य संवर्धन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवाया गया जिसमें गोदित अवधि के दौरान 150 से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया। इस कार्य के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र में कार्यरत गृह विज्ञान की महिला वैज्ञानिकों के माध्यम से अचार, मुरब्बा, चटनी, जूस, पोष्टिक दलिया, बिस्कुट, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, सब्जी को सुखाकर भण्डारित करने के तरीके, अनाज भण्डारण, पोष्टिक पापड़ व अन्य गृह उत्पादों के संबंध में एक और दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किये गयें एवं उपरोक्त पदार्थों के बनानें के प्रदर्शन महिला किसानों को दियें गये।

12. जैविक खेती एवं विश्वविद्यालय फार्म भ्रमण :

जैविक खेती के प्रोत्साहन हेतु कृषि अनुसंधान के विषय विषेशज्ञों द्वारा लगातार व्याख्यान दिये गये जिससे किसानों के बीच कीटनाशकों के समन्वित इस्तेमाल और जैविक खेती के बारें में जागरूकता बढ़ी। नेवरा रोड़ गाँव के किसानों को गोदित अवधि के दौरान कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर और संबंधित संस्थाओं में आयोजित किसान मेलों एवं कृषि संबंधित कार्यक्रमों में विश्वविद्यालय के परिवहन साधनों से बुलवाकर सहभागिता करवाई गई। इस कार्य से मुख्यालय पर उपलब्ध नवीन कृषि तकनीकों (संरक्षित खेती, नेट हाउस, उन्नत कृषि यंत्र और गैर परम्परागत फसलें आदि) से किसान रूबरू हुये।

13.अन्य गतिविधियां :

नेवरा रोड़ गाँव के किसानो को किसान क्रेडिड कार्ड की उपयोगिता एवं मृदा स्वाथ्य कार्ड एवं किचन गार्डन की उपयोगिता के संबंध में समय-समय पर अवगत कराया गया तथा राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, कोटा के सौजन्य से 150 से अधिक किचन गार्डन बीज किट वितरित किये गये।

इफको, जोधपुर के माध्यम से किसानों को किसान कॉल सेंटर से जुड़ने के लिए 100 से अधिक सिम कार्ड मुफ्त में उपलब्ध कराये गये। इसकी सहायता से किसानों को मौसम में बदलाव की जानकारी, उन्नत तकनीकी की जानकारी कॉल सेंटर से संदेश द्वारा उनके मोबाइल पर घर बैठे प्राप्त होती है।

बिजली आपुर्ति व्यवस्था में सुधार करवाया गया। बिजली बचत हेतु ग्रामीणों को जागरूक किया गया। गांव में रात्रि के समय रोशनी हेतु स्ट्रीट लाईटें जन सहभागिता से लगवायी गयी।

गोदित अवधि के दौरान कृषि विश्वविद्यालय,जोधपुर एक नवसृजित संस्थान था।गांव को स्मार्ट ग्राम बनाने में विश्वविद्यालय के नोडल ऑफिसर एवं वैज्ञानिकों ने पूर्ण प्रयास किये, फलस्वरूप किसानों की पारिवारिक आय एवं पोषण स्तर में वृद्धि हुई तथा उनको अपने कृषि उत्पादों का विपणन करने में आसानी हुई। इस गोदित योजना की वजह से गाँव के अधिकतर किसान आज भी कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर से लगातार संपर्क में है। उनके द्वारा कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के बार-बार भ्रमण से उनको उच्च कृषि तकनीकी की जानकारी प्राप्त हुई। उसका प्रर्दशन और असर आज भी नेवरा रोड़ गाँव में दिखाई पड़ता है।

गोदित नेवरा रोड़ में आवंटित लक्ष्यों को पूरा करने के पश्चात जुलाई, 2018 में अन्त्योदया मिशन के अन्तर्गत चयनित गाँव लूणी को गोद लेकर इसे भी स्मार्ट ग्राम में बदलने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया जो वर्तमान में चल रहा है।

जय हिन्द।। जय राजस्थान।।

जय कृषि विश्व विद्यालय, जोधपुर

प्रसार शिक्षा निदेशालय

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर